بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob 9682536974 E-Mail: ansarullah@qadian.in Khulasa Khutba-16.02.2024 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع گورداسپور (پنجاب)

ओहद के युद्ध में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जीवन परिचय के आयाम तथा सहाबा रज़ी. का आप स. के साथ इश्क़ एवं आज्ञा पालन का सम्बंध।

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 16 फ़रवरी 2024, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद यू. के.।

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللّٰہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- ओहद की लड़ाई के संदर्भ में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सीरत तथा सहाबा किराम क आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इश्क़ एवं मुहब्बत के सम्बंध का वर्णन हो रहा था, इस संदर्भ में हज़रत ख़वारजा बिन ज़ैद रज़ी. की शहादत का वर्णन भी मिलता है। आप रज़ी. को तेरह से अधिक घाव लगे थे तथा अन्ततः सफ़वान बिन उमय्या ने आपको शहीद कर दिया था, फिर आपके शव को कुचला भी गया था।

रिवायत है कि ओहद के दिन हज़रत अब्बास बिन इबादः रज़ी. ऊँची आवाज़ के साथ कह रहे थे कि ऐ मुसलमानों के गिरोह, अल्लाह तथा अपने नबी से जुड़े रहो। जो कष्ट तुम्हें पहुंचा है यह अपने नबी की अवज्ञा से पहुंचा है, वह तुम्हें मदद का वादा देता है परन्तु तुमने धैर्य छोड़ दिया। फिर हज़रत अब्बास बिन इबादा रज़ी. ने अपना युद्ध कवच उतारा तथा हज़रत ख़्वार्जा बिन ज़ैद रज़ी. से पूछा कि क्या आपको इसकी आवश्यकता है? ख़्वार्जा रज़ी. ने कहा कि नहीं। जिस चीज़ की तुम्हारी इच्छा है वही मैं भी चाहता हूँ, अर्थात शहादत। फिर सब दुशमन से भिड़ गए। अब्बास बिन इबादा रज़ी. कहते थे कि हमारे देखते हुए यदि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कोई कष्ट पहुंचा तो हमारा अपने रब के समक्ष क्या जवाब होगा और हज़रत ख़वार्जा रज़ी. यह कहते थे कि अपने रब के हुज़ूर हमारे पास न तो कोई बहाना होगा तथा न ही कोई दलील। हज़रत अब्बास बिन इबादा रज़ी. को सुफ़यान बिन अब्दे शम्स सलमी ने शहीद किया तथा ख़वार्जा बिन ज़ैद का तीरों के कारण शरीर म दस घाव से अधिक लगे थे।

फिर हज़रत शमास बिन उसमान रज़ी. की शहादत का वर्णन है। आप बदर एवं ओहद की लड़ाई में शामिल हुए तथा ओहद के युद्ध में बड़े शौर्य के साथ लड़ते हुए 34 वर्ष की आयु में शहीद हुए।

आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मने शमास बिन उसमान रज़ी. को ढाल के समान पाया। हज़रत शमास बिन उसमान के बारे में इतिहास ने ऐसी घटना को सुरक्षित किया है जो उनकी आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुहब्बत का एक उदाहरण बन गया है तथा इस्लाम के लिए बलिदान का एक उच्चतम स्तर क़ायम करने वाला उदाहरण भी है। ओहद के युद्ध में जहाँ हज़रत तलहा की इश्क़ व मुहब्बत की कथा का वर्णन मिलता है कि किस तरह उन्होंने अपना हाथ आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चेहरे के सामने रखा कि कोइ तीर आप स. को न आ लगे, वहाँ हज़रत शमास ने भी बड़ी महान भूमिका अदा की। हज़रत शमास आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने खड़े हो गए तथा हर एक वार अपने ऊपर लिया।

फिर हज़रत नोमान बिन मालिक रज़ी. की शहादत का वर्णन है, आप भी बदर तथा ओहद की लड़ाई में शरीक हुए तथा ओहद के युद्ध में शहीद हुए। एक रिवायत के अनुसार आपको सफ़वान बिन उमय्या ने, जबकि दूसरी रिवायत के अनुसार आपको अबान बिन सईद ने शहीद किया था।

एक ही परिवार के चार लोगों की शहादत का वर्णन भी मिलता है। इन शहीदों में साबित बिन वक़श रज़ी. तथा उनके भाई रफ़ाअः बिन वक़श रज़ी., इसी तरह साबित के दो बेटे सलमा बिन साबित रज़ी. तथा उमरू बिन साबित रज़ी. शामिल हैं। इन सबका सम्बंध अन्सार के क़बीले बनू अब्दुल अश्हल से था। रफ़ाअः बिन वक़श रज़ी. बूढ़े आदमी थे जिन्हें ख़ालिद बिन वलीद ने शहीद किया।

उमरू बिन साबित रज़ी. के विषय में रिवायतों में वर्णित है कि वे ओहद के दिन फ़जर की नमाज़ के बाद ईमान लाए थे तथा उसी दिन मुसलमानों के साथ जिहाद करते हुए शहीद हो गए। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आपके विषय में फ़रमाया कि उमरू बिन साबित रज़ी. जन्नती हैं।

इसी प्रकार सहाबियों रज़ी. के बलिदानों में हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश रज़ी. का वर्णन है। इतिहास में लिखा है कि ख़ुदा और रसूल स. की मुहब्बत ने आप रज़ी. को पूरी दुनिया से निःस्वार्थ कर दिया था। इन्हें यदि कोई अभिलाषा थी तो यह कि प्रिय प्राण किसी तरह ख़ुदा की राह में बलिदान हो जाएँ। अतः आपकी यह इच्छा पूरी हुई तथा ओहद क युद्ध में आप शहीद हो गए। शहादत से एक दिन पहले आप रज़ी. ने यह दुआ की थी कि ऐ ख़ुदा, कल मेरे सामने ऐसा आदमी आए जो हमला करने में कठोर हो तथा उसका रौब छाया हुआ हो, उससे मैं तेरे लिए युद्ध करूँ तथा वह मेरे साथ लड़े। वह मुझ पर भारी पड़े तथा मुझे मार डाले तथा मेरे कान, नाक काट डाले, फिर मैं उसी अवस्था में तेरे समक्ष उपस्थित हो जाऊँ और तू मुझसे पूछे कि ऐ अब्दुल्लाह! किसकी राह में तेरे नाक, कान काटे गए हैं? तो मैं निवेदन पूर्वक कहूँ, ऐ अल्लाह! तेरी राह में तथा तेरे रसूल की राह में। हज़रत हमज़ा रज़ी. तथा हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश रज़ी. को एक ही क़ब्र में दफ़न किया गया था। हज़रत हमज़ा रज़ी. हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश रज़ी. के मामा थे तथा शहादत के समय आपकी आयु चालीस वर्ष से कुछ अधिक थी।

फिर अबू सअद ख़ीसमा की शहादत का वर्णन है। ख़ीसमा रज़ी. ने ओहद के दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से निवेदन किया था कि या रसूलुल्लाह स! मैं बदर के युद्ध में शरीक नहीं हो सका था और अल्लाह की क़सम, मैं इस बात का इच्छुक था। मैंने बदर में जाने के लिए पर्चियाँ डालीं तो मेरे बेटे सअद बिन ख़ीसमा रज़ी. का नाम निकला तथा उसने शहादत पाई। मैंने सपने में अपने बेटे को जन्नत के बाग़ों तथा नहरों में सैर करते हुए बड़े अच्छे हाल में देखा। वह मुझसे कह रहा था कि आप हमारे पास आ जाएँ, हम जन्नत में साथ होंगे, मैंने अपने रब के वादों को सच्चा पाया है। अतः मैं अपने बेटे से मिलने के लिए उत्सुक हूँ। आप स. दुआ करें कि अल्लाह तआला मुझे शहादत दे तथा जन्नत में अपने बेटे का साथ प्रदान करे। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दुआ की, और यूँ ख़ीसमा रज़ी. ओहद के युद्ध में शहीद हो गए।

फिर अब्दुल्लाह बिन उमरू रज़ी. की शहादत का वर्णन है। आप रज़ी. ने शहादत से पहले अपने बेटे जाबिर रज़ी. को फ़रमाया था कि मैं देखता हूँ कि मैं सर्वप्रथम शहीदों में से हूंगा, मेरे ऊपर कुछ ऋण है तुम वह अदा कर देना तथा अपनो बहनों के साथ सद्व्यवहार करना। जाबिर रज़ी. बयान करते हैं कि अगले दिन मेरे वालिद सबसे पहले शहीद होने वाले थे, काफ़िरों ने उनके शव को कुचला भी था। हज़रत जाबिर रज़ी. कहते हैं कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ओहद के शहीदों को दफ़न करने के लिए पधारे तो आप स. ने फ़रमाया कि इन शहीदों को इनके घाव के साथ ही कफ़न दो क्यूँकि मैं इन पर गवाह हूँ। कोई मुसलमान ऐसा नहीं जो अल्लाह की राह में ज़ख़्मी किया जाए किन्तु वह क़यामत के दिन इस तरह आएगा कि उसका ख़ून बह रहा होगा तथा उसका रंग केसरी होगा तथा उसकी सुगन्ध कस्तूरी की होगी, अर्थात ये लोग पसन्दीदह लोग हैं।

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ी. बयान करते हैं कि मेरे पिता जी को जब ओहद के दिन लाया गया तो मेरी बुआ जी रोने लगीं तथा मैं भी रोने लगा, लोग मुझे रोकने लगे किन्तु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझे नहीं रोका, फिर आंहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम लोग इस पर रोओ अथवा न रोओ इससे कोई अन्तर नहीं आता, अल्लाह की क़सम, फ़रिश्ते इस पर निरन्तर छाया किए हुए थे यहाँ तक कि तुमने उसे दफ़न कर दिया।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीयल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि जो मुसलमान शहीद हो गए हैं तुम उन्हें मरा हुआ मत कहो, वे अल्लाह तआला के जीवित सैनिक हैं तथा अल्लाह तआला उनका बदला अवश्य लेगा।

ओहद के युद्ध के बाद आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने विवशता के कारण बैठ कर ज़ोहर की नमाज़ पढ़ाई, आपके पीछे सहाबियों ने भी बैठ कर नमाज़ अदा की।

ओहद के शहीदों की संख्या के बारे में अधिकांश विद्वानों का कथन है कि उस दिन कुल मृतकों की संख्या सत्तर थी, कुछ अन्य रिवायतों में यह संख्या अस्सी तथा छियानवे तथा उनचास से एक सौ आठ तक बयान हुई है।

ओहद के शहीदों के जनाज़े की नमाज़ के बारे में यह वर्णन मिलता है कि आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ओहद के शहीदों के जनाज़े उस अवसर पर नहीं पढ़े थे। हज़रत इमाम शाफ़ी बयान करते हैं कि निरन्तर रिवायतों से यह बात प्रमाणित होती है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ओहद के शहीदों का जनाज़ा नहीं पढ़ा। जिन रिवायतों में वर्णन आया है कि आप स. ने उन शहीदों का जनाज़ा पढ़ा तथा हज़रत हमज़ा रज़ी. पर सत्तर तकबीरें कहीं थीं, यह बात अनुचित है। जहाँ तक इस रिवायत का सम्बंध है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आठ साल के बाद उन शहीदों का जनाज़ा पढ़ा था तो इस रिवायत में इस बात का वर्णन हुआ है कि यह घटना आठ साल बाद की है।

जुम्अः के ख़ुत्बः के अन्त में हुज़ूरे अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- दुनिया के जो हालात हैं उनके बारे में भी कुछ कह दूँ। युद्ध की आग तो अब फैलती जा रही है, इंसानियत को विनाश से बचने क लिए अब बहुत दुआओं की आवश्यकता है तथा अहमदी ही वास्तव में सही दुआ करें तो इसके लिए कुछ कर सकते हैं। इसराईल की सरकार है, वह अपनी डिठाई पर तुली हुई है, हर बात पर वह अपना कोई न कोई बहाना करके बयान कर दते हैं, कि यह कारण हुआ इस लिए हमने यह किया और किसी भी अक़ल की बात को मानने के लिए वे तय्यार नहीं। अन्य शासन हैं दुनिया के जो शक्ति शाली, उनकी इच्छा है अथवा उनको भी भय है, ये पहले अपना बयान इस बात पर देते हैं कि युद्ध विराम होना चाहिए, अत्याचार रुकना चाहिए, उसके बाद जब इसराईल का प्रधान मन्त्री अथवा उसकी सरकार बयान देती है तो वे उसका साथ देते हैं। अल्लाह तआला मुसलमानों पर भी रहम फ़रमाए तथा उनको भी अपनी ओर झुकाए, यही एक रास्ता है जिसकी शरण में आकर ये लोग अपनी दुनिया तथा आख़िरत संवार सकते हैं। अल्लाह तआला इन पर रहम करे और हमें भी दुआओं की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए तथा हम पर भी रहम फ़रमाए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131